जीवन परिचयः–

सेनापति का जन्म दीक्षित गोत्रीय ब्राह्ाण परिवार में विक्रम संवत् 1616 में हुआ।उनके पिता का नाम गंगाधर और पितामह का नाम परशुराम दीक्षित था। उनके विद्यागुरू हीरामणि दीक्षित थे। वे बहुत ही आत्मविश्वासी थे। अपना परिचय देते हुए एक स्थान पर इन्होंने कहा है–

''सेनापति सोई,सीतापति के प्रसाद जाकी,

सब कवि कान दै, सनत कविताई है।''

ये रीतिकाल के महान एव भावप्रवण कवि माने जाते हैं। कुछ लोगों का कथन है कि सेनापति इनका उपनाम या उपाधि है किन्तु इनका मूल नाम किसी को भी ज्ञात नहीं है।परन्तु इस बात में कतई संदेह नहीं है कि काव्य–कला और मौलिकता की दृष्टि से युगीन कवियों में वे सेनापति की भाँति थे। सेनापति रामभक्त कवि थे। श्लेष अंलकार के प्रयोग में वे सिद्धहस्त थे। उन्होनें किसी कवि का अनुसरण नहीं किया।ये रीतिबद्ध कवियों की श्रेणी में आते हैं। इनकी दो रचनाएँ प्रसिद्ध है– काव्यकल्पद्रुम तथा कवित्त रत्नाकर। काव्यकल्पद्रुम जो अप्राप्य है इनका काव्य शास्त्रीय ग्रन्थ रहा होगा। इनके कवित्तों में अलंकार और रसध्वनि के उदाहरण एक से बढकर एक मिलते हैं। इन्होंने अलंकार संप्रदाय का अनुसरण किया।

सेनापति ब्रजभाषा के कवि है।साधारण शब्द भी उनके हाथ में आते ही सैनिक की भाँति सशक्त बन जाते है। वे फारसी शब्दों का प्रयोग भी करते थे। उनकी रचनाओं में प्रसाद और ओज गुण की प्रधानता है। परिमार्जित भाषा का प्रयोग और भावगांभीर्य उनके काव्य की विशेषता है।

पाठ परिचयः–

यहाँ प्रस्तुत कविता सेनापति के ऋतुवर्णन का प्रौढ और प्रांजल नमुना है। इनमें पूरी निपुणता से ऋतु के उपादनों एव उसके लक्षणों का उपयोग कवि ने किया है। वसन्त का वैभव पूरी छटा के साथ पंक्तियों में पिरोया गया है। कवि ने ऋतु वसंत का सूक्ष्मतापूर्वक मानवीकरण किया है। पूरा परिदृश्य राजा के आगमन काल के वस्तुओं एवं भावनाओं से बुना गया है। रंगीन उपवन सुगन्धमय हैं कोकिल चारण की भूमिका में पदगान कर रहा है। शोभा के सुखमय उपकरण सेना के कवायद की छवि उत्पन्न कर रहा है, क्योंकि राजा एकाकी गमन नहीं करता है। इसी तरह भीषण ग्रीष्म के बाद झुलसी हुई प्रकृति पर जब वर्षा की बूँदे पडती है तो धरती नयनाभिराम एवं सुखमय हो जाती है। मानसून का आगमन इस कृषि प्रधान देश के लिए एक उत्सव की तरह होता है।कवि ने डूब कर बरसात के ऋतु चक्र को आँखों के आगे साकार कर दिया है। शीत ऋतु की आक्रामकता को सेनापति के आचरण में कवि ने वर्णित किया है। इस हमले ने पूरी प्रकृति को पराजित कर दिया है। बर्फीली हवा की चुभन तीर के समान घातक है।सूरज का तेवर निस्तेज पड गया है। अलाव की आग को घेर कर जन समुदाय ठिठुर रहे है।देशज समाज पर ऋतुओं के प्रभाव का इतना जीवन्त वर्णन ही सेनापति को कालजयी कवि बनाता है।

<u>ऋतु वर्णन</u>

बरन बरन तरू फूले उपबन बन,
सोई चतुरंग संग दल लहियतु है।
बंदी जिमि बोलत बिरद बीर कोकिल है,
गुंजत मधुप गान गुन गहियतु हैं।

बरन–बरन–अलग अलग रंगों के।
तरू–वृक्ष। फूले–फूलों से भर गए।
चतुरंग–सेना के चार अंग,हाथी घोडे रथ और पैदल सैनिक
दल–सेना। लहियतु है–संग लिए है।जिमि–जैसे,



Mahesh Kumar Bairwa (Lecturer)

आवै आस–पास पुहूपन की सुबास सोई,
सोने के सुगंध माँझ सने रहियतु हैं।
सोभा कौं समाज, सेनापति सुख–साज ,आज,
आवत बसंत रितुराज कहियतु हैं।।

बंदी–यशगान करने वाले।बिरद–यश।कोकिल–कोयल
मधुप–भौरें।गहियतु हैं–ग्रहण करते है।
माँझ–बीच में।रितुराज–ऋतुओं का राजा
सुबास–सुगंध

**संदर्भ तथा प्रसंगः–** प्रस्तुत कवित्त छंद कवि सेनापति की रचना कवित्त रत्नाकर से हमारी पाठ्य पुस्तक में संकलित ऋतु वर्णन पाठ से लिया गया है।इस कवित्त में कवि ने वंसत ऋतु को ऋतुराज बताते हुए उसके आगमन पर प्रकृति के विविध दृश्यों का वर्णन किया है।

व्याख्याः– ऋतुओं के राजा वंसत आ रहे हैं। उनके साथ उनका सारा राज–समाज भी है। वसंत ऋतु आने पर वनों और उपवनों में विविध रंग–रूपों वाले वृक्ष फूलों से सज गए है। ये ही ऋतुओं के राजा वसंत के साथ आ रही चतुरंगिणी सेना है। कोयलों का कूकना ही राजा वसंत के गुणगायकों द्वारा उनके यश का वर्णन है। फूलों पर गुंजार कर रहे भौंरें संगीतकारों का रूप ग्रहण किए हुए हैं। चारों ओर से फूलों की सुगंध आ रही है जो सोने में सुंगध होने की–दुगुना आनन्द होने की –कहावत सिद्व कर रही हैं अथवा सरसों के सोने जैसे पीले फूलों के साथ सुगंध का छा जाना, सोने में सुगंध होने की बात प्रत्यक्ष कर रहा है।आज चारों ओर सुंदरता छाई हुई है। सभी प्राणी सुखी हो रहे हैं। यह सारा साज–बाज ऋतुराज बसंत के आगमन के उपलक्ष्य में हो रहा है।

विशेषः–

1. रचना साहित्यिक ब्रज भाषा में है। कवि भाषा के प्रभावशाली प्रयोग में निपुण है।
2. शैली आलंकारिक, वर्णनात्मक तथा शब्द चित्रांकनमयी है।
3. बरन बरन में पुनरूक्ति, बोलत बिरद बीर ,गान गुन गहियतु तथा सुबास सोई, सोने के सुगंध में अनुप्रास अलंकार है। पूरे छंद में सांगरूपक अलंकार है।

देखैं छिति अंबर जलै है चारि ओर छोर,
तिन तरबर सब ही कौं रूप हर्‌यौ है।
महाझर लागै जोति भादव की होति चलै,
जलद पवन तन सेक मानों पर्‌यौ है।
दारून तरनि तरैं नदी सुख पावैं सब,
सीरी घन छाँह चाहिबौई चित्त धर्‌यौ है।।
देखौ चतुराई सेनापति कविताई की जू,
ग्रीषम विषम बरसा की सम कर्‌यौ है।।

छिति–पृथ्वी। अंबर–आकाश।जलै हैं–जल अथवा जल रहे हैं।
तिन–घास।तरबर–वृक्ष।हर्‌यौ है–हरे रंग का है/हर लिया है।
झर–वर्षा की झडी।भादव–भादों का महीना/दावानल।
जलद–तपती हुई वायु/बादल।सेक–सुखदाई स्पर्श/गर्म सेकाई
दारून–कष्टदायक/काठ की ।तरिन–नाव/सूर्य। तरैं–नीचें।
सीरी–ठंडी। घन छाँह–बादलों की छाया।चाहिबौई–चाहना ही।
ग्रीषम–गर्मी की ऋतु।विषम–भयानक।सम–समान।

इस छंद में कवि द्वारा भंयकर ग्रीष्म ऋतु को अपनी कल्पना और काव्य कौशल से वर्षा ऋतु का रूप दिया गया है।

व्याख्याः– ग्रीष्म ऋतु के पक्ष में–भंयकर गर्मी के कारण धरती और आकाश चारों ओर दूर दूर तक जलते हुए से दिखाई दे रहे हैं। भीषण ताप ने घास और वृक्षों सभी को झुलसाकर उनका रूप नष्ट कर दिया है। सूर्य की प्रचंड किरणों से शरीर को अग्नि का ताप पीडित कर रहा है। चारों ओर वन में लगी आग का सा प्रकाश फैलता जा रहा है। तपती हुई वायु से शरीर की सेंकाई सी हो रही है। भंयकर रूप से तप रहे सूर्य के नीचें लोग नदियों में ही सुख पा रहें है। बादलों की शीतल छाया, पानी ही सभी के मन को अच्छा लग रहा है।कवि सेनापति कहते हैं कि उनकी कविता रचने की चतुराई को सभी कविता प्रेमी देखें। उन्होंने भंयकर ग्रीष्म ऋतु को भी अपनी काव्य कुशलता से वर्षा ऋतु के समान बना दिया है।

वर्षा ऋतु के पक्ष में –धरती और आकाश में वर्षा ऋतु आने के कारण चारों ओर दूर तक जल ही जल दिखाई दे रहा है। घास और वृक्ष सभी का रंग हरा हो गया है। वर्षा की भारी झडी लगी हुई है और भादों के मास में

Mahesh Kumar Bairwa (Lecturer)

बिजली चमकने का प्रकाश होता चल रहा है। बादलों को छुकर आ रही शीतल पवन के स्पर्श से शरीर को बडा सुख मिल रहा है। सभी लोग काठ की नावों से नदियों को पार करके आनंदित हो रहे है। सभी बादलों की शीतल छाया में रहना चाह रहें हैं। कवि सेनापति अपनी कविता की बडाई करते हुए कह रहे है कि उन्होंने अपनी चतुराई से भीषण ग्रीष्म ऋतु को वर्षा ऋतु का रूप दे दिया है।

विशेषः–

1. द्विअर्थक शब्दों के प्रयोग से भाषा पर कवि के पूर्ण अधिकार का प्रमाण मिल रहा है।
2. शैली चमत्कार प्रदर्शन वाली है।।श्लेष और सांगरूपक अलंकारों का प्रयोग है।

दामिनी दमक, सुरचाप की चमक, स्याम
घटा की झमक अति घोर घनघोर तैं।
कोकिला ,कलापी कल कूजत हैं जित–तित,
सीकर ते सीतल समीर की झकोर तैं।
सेनापति आवन कह्यो है मनभावन सु
लाग्यौ तरसावन विरह–जुर जोर तैं।
आयौ सखी सावन, मदन सरसावन,
लग्यौ है बरसावन सलिल चहुँ और तैं।।

शब्दार्थः–

दामिनी–बादलों में चमकने वाली बिजली।सुरचाप–इन्द्रधनुष।स्याम–काली।झमक–मंद मंद बरसती बूंदों की ध्वनि।घोर –भयंकर,अत्यधिक।घनघोर–बादलों का गर्जन ।कलापी–मोर।कल–मंद,मधुर।कूजत–कूकता, बोलते है।जित–तित–इधर उधर।सीकर–जल की बूँदे।समीर–वायु।झकोर–झकोरा,झौंका।मनभावन–मन को प्रिय लगने वाले (श्रीकृष्ण)।तरसावन–व्याकुल करना।बिरह–जुर–वियोगरूपी ज्वर,विरह–वेदना।मदन–कामदेव,मिलन की इच्छा।सरसावन–उत्पन्न करने वाला।सलिल–जल।

इस कवित्त में वर्षा ऋतु के सावन के मास में आने पर दिखाई देने वाले दृश्यों का एक नारी अपनी सखी से वर्णन कर रही है और अपने मन की दशा बता रही है।

व्याख्याः– देखो सखि! श्रावण मास आने पर बादलों में बिजली चमकने लगी है।आकाश में विविध रंगों वाला इन्द्रधनुष भी अपनी छटा बिखेर रहा है।काली घटा से बरसती मंद मंद बूंदों की ध्वनि सुनाई दे रही है। और घने बादल डराने वाला गर्जन कर रहें हैं।कोयल और मोर मंद और मधुर स्वर में जहाँ–तहाँ बोल रहें है।वर्षा की बूँदों से शीतल पवन के झौंके आ रहें है।मेरे प्रिय ने मुझे आने का संदेश दिया है।अब तो उनसे मिलने के लिए मेरा वियोगी हदय तरस रहा है।हे सखि! देखों मिलन की इच्छा जगाने वाला सावन का महिना आ गया है और चारों ओर जल बरस रहा है।

विशेषः–

1. भाषा ध्वनि सौन्दर्य से गमक रहीं हैं। दमक चमक झमक कानों को गुंजित कर रहें हैं।
2. वर्षा के दृश्यों का सुखद संयोजन किया गया है।प्रकृति का मनोभावों को उत्तेजित करने में प्रयोग हुआ है।
3. वियोग श्रृंगार रस की झलक दिखाई दे रही है।

सीत कौ प्रबल सेनापति कोपि चढ्यौ दल,
निबल अनल, गयौ सूरि सियराइ कै।
हिम के समीर, तेई बरसैं विषम तीर,
रहीहै गरम भौन कोनन मैं जाइ कै।



Mahesh Kumar Bairwa (Lecturer)

धूम नैन बहैं, लोग आगि पर गिरे रहैं,
हिए सौं लगाई रहैं नैंक सुलगाई कै।
मानो भीत जानि महा सीत तैं पसारि पानि,
छतियाँ की छाँह राख्यौ पाउक छिपाइ कै।।

शब्दार्थः– सीत–ठण्ड,शीत ऋतु।कोपि–क्रोध करके। चढ्यौं–चढाई कर दी हैं, आक्रमण कर दिया है।दल–सेना।निबल–निर्बल,प्रभावहीन।अनल–अग्नि।सूरि–सूर्य।सियराइ–ठण्डा हो जाना। हिम–बर्फ,घोर ठण्ड।भौन–भवन,घर।कौनन–कानों में।धूम–धुआँ।नैन बहै–आँसू बह रहे हैं।हिए–हद्य।भीत–डरा हुआ।पसारि–फैलाकर। पानि–हाथ।छतियाँ की छाँह–छाती की ओट में।पाउक–आग।

व्याख्याः– कवि सेनापति कहते है कि शीत ऋतु की शक्तिशाली सेना ने जग–जीवन पर क्रोधित होकर चढाई कर दी है।इसके कारण अग्नि शक्तिहीन हो गई है और सूर्य ठण्डा पड गया है।इन दोनों का प्रभाव लोगों की शीत से रक्षा नहीं कर पा रहा है।बर्फ जैसी ठण्डी पवन ही शीत की सेना द्वारा बरसाए जा रहे भयंकर तीरों के समान है। शीत के भय से बेचारी गर्मी घरों के कोनों मे जा छिपी है।आग तापने वाले लोगों की आँखों से धुँए के कारण जल बह रहा है।लोग ठण्ड से बचने के लिए आग पर झुके जा रहें हैं।आग के तनिक सा सुलगते ही लोग उसे तापने लगते हैं।इस दृश्य को देख कर ऐसा लग रहा है मानो आग को शीत से भयभीत जानकर लोगों ने उसे प्रचण्ड ठण्ड से बचाने के लिए हाथ फैलाकर अपने छातियों की छाया में छिपा लिया है।

विशेषः–

1. साहित्यिक और समर्थ ब्रज भाषा का प्रयोग हुआ है।
2. शैली शब्द चित्रात्मक है। कवि ने सटीक शब्दों का चयन करके शीतकालीन दृश्यों को साकार कर दिया है।भयानक रस की झलक है।

प्र01–कवि ने किस ऋतु को ''रितुराज'' कहा है–
(क) हेमन्त (ख) शिशिर (ग) ग्रीष्म (घ) वसन्त✓

प्र02–सुरचाप का अर्थ हैं–
(क) इन्द्रधनुष✓ (ख) देवता (ग) अर्धवृत्त (घ) घटा

प्र03– कविता में बंदीजन किसे कहा गया हैं ?

उ0 – कविता में बंदीजन कोयल को कहा गया है।

प्र04 – प्रिय ने किस ऋतु में वापस आने के लिए प्रेयसी को कहा गया है?

उ0– प्रिय ने प्रेयसी से वर्षा ऋतु में वापस आने को कहा था।

प्र05–ऋतु वर्णन में ऋतुराज किसे कहा गया है ?

उ0 –ऋतु वर्णन में ऋतुराज बंसत को कहा गया है।

प्र06– '' निबल अनल '' से क्या तात्पर्य है।

उ0– तात्पर्य है कि बहुत अधिक ठण्ड के कारण आग की गर्मी भी कम प्रतीत होती है।

प्र07–चंतुरंग दल से सेनापति का क्या तात्पर्य है?

उ0 –चतुरंग दल का अर्थ चार अंगों से युक्त सेना होता है।ये चार अंग हैं– हाथी सवार, घुडसवार, रथ सवार, और पदैल सैनिक। कवि ने बसंत ऋतु में फूलों से युक्त वनों और उपवनों में स्थित वृक्षों को ऋतुराज वंसत की चतुरंगिणी सेना बताया है। ऋतुओं के राजा वसंत के आगमन की सूचना दे रही है।

प्र08–सावन के माह में कामदेव नायिका को परेशान कैसे कर रहा है ?

उ0–सावन का महीना आते ही आकाश में काली घटाएँ घिर आई हैं।बार बार बिजली चमक रही है और बादल भयंकर ध्वनि से गरज रहे हैं। कोयल, मोर आदि पक्षी कलरव कर रहे हैं। नन्हीं बूँदों से शीतल पवन चल रही

Mahesh Kumar Bairwa (Lecturer)

है।ऐसे वातावरण में प्रेयसी को कामदेव के प्रभाव से विरहरूपी बुखार चढ आया है। वह प्रिय से मिलने को तरस रही है।

प्र09– ग्रीष्म ऋतु में बादल और हवा की क्या स्थिति हो गई है ?

कवि सेनापति ने छंद में ग्रीष्म और वर्षा ऋतुओं का श्लेष अलंकार के माध्यम से एक साथ वर्णन किया हैं ग्रीष्म ऋतु आने से धरती और आकाश तप रहे हैं और गर्म हवा आग की लपट के समान होकर शरीर को झुलसा रही है। सभी लोग ग्रीष्म के ताप से व्याकुल होकर बादलों की शीतल छाया की चाह करते हुए व्याकुल हो रहे है।

प्र010–सेनापति का ऋतुवर्णन हिन्दी साहित्य में अनूठा क्यों हैं ?

उ0–हिन्दी के कवियों में सेनापति अपने प्रकृति वर्णन के लिए प्रसिद्व रहे हैं।सेनापति रीतिकालीन कवि थे। रीतिकालीन अधिकांश कवियों ने श्रृंगार रस प्रधान रचनाएँ की हैं। सेनापति ने विस्तार से प्रकृति वर्णन भी किया है।प्रकृति वर्णन के दो स्वरूप रहे हैं। उद्दीपन रूप तथा आलम्बन रूप। उद्दीपन प्रधान रूप में प्रकृति केवल भावों को उत्तेजित करने वाली दिखाई गई है और आलम्बन प्रधान रूप में प्रकृति को ही कविता का विषय बनाया गया है। कवि सेनापति के प्रकृति वर्णन की विशेषता यही है कि उन्होनें लीक से हटकर आलम्बन प्रधान प्रकृति वर्णन किया है। सेनापति ने सभी ऋतुओं का विविधतापूर्ण चित्रण किया है। सभी ऋतुओं के दृश्यों का विस्तार और सजीवता से वर्णन हुआ है। इस वर्णन में सेनापति के सूक्ष्म निरीक्षण का परिचय मिलता है।वह ऋतुओं का शब्दचित्र उपस्थित करने में निपुण है।हमारी पाठ्य–पुस्तक में सेनापति के प्रकृति वर्णन पर आधारित चार कवित्त संकलित है। इनमें वसंत, ग्रीष्म, और वर्षा का श्लेष अलंकार पर आधारित संयुक्त वर्णन तथा वर्षा और शीत ऋतु का वर्णन सम्मिलित है। इनमें सेनापति के प्रकृति वर्णन की सभी विशेषताएँ विद्यमान है।

प्र011–पठित काव्यांश के आधार पर शीत ऋतु का वर्णन कीजिए।

उ0– शीत ऋतु ने अपनी प्रबल सेना के साथ जगत पर आक्रमण किया तो आग की शक्ति क्षीण हो गई और सूर्य का ताप भी ठण्डा पड गया। बर्फ जैसी ठण्डी वायु चलने लगी है जो शरीर में तीर की भाँति चुभ रही है।शीत के भय से गर्मी भाग कर घरों के कोनों में जा छिपी है अर्थात् घरों के भीतर ही ठण्ड से कुछ रक्षा हो रही है।लोगों ने शीत से बचने के लिए अलाव जला लिए। तापने वालों की आँखों से धुँए के कारण पानी बह रहा था। मानो ठण्ड के भय से रो रहे हों। लोग ठण्ड दूर करने के लिए आग पर गिर पड रहे हैं।आग के जरा सा सुलगते ही लोग उस पर झुककर तापने लगते हैं। आग पर हाथ फैलाकर झुके हुए लोगों को देखकर ऐसा लग रहा है कि आग को ठण्ड से भयभीत देखकर लोगों ने उस पर हाथ फैलाकर और झुककर उसे अपनी छातियों के नीचे छिपा रखा है।

प्रश्न12–वसंत ऋतु के सौन्दर्य पर विस्तृत टिप्पणी लिखिए।

उ0–वसंत को ऋतुराज (ऋतुओं का राजा) कहा गया है। शीत ऋतु के पश्चात वसंत ऋतु के आगमन से ऐसा लग रहा है मानो शीत को पराजित करने और जीव जगत को आनन्दित करने के लिए, ऋतुओं के राजा वंसत ने चतुरंगिणी सेना सजाकर चढाई कर दी हो। राजा वसंत के स्वागत में कोयलरूपी बंदीजन(प्रशंसा करने वाले) उसका गुणगान कर रहे हैं।भौंरों की गुंजार के रूप में राजा के मनोरंजन के लिए गायकों द्वारा गीत गाए जा रहे है। चारों ओर छाई फूलों की सुगंध (सोने में सुगंध) का दृश्य उपस्थित कर रही है। सरसों के पीले खेत राजा के स्वागत में बिछे सुगंध से युक्त सोने के बिछौने है।

इस प्रकार वसंत के स्वागत में आज धरती पर चारों ओर शोभा छाई हुई है और सभी प्रकार की सुखदायी साज सज्जा दिखाई दे रही है।

प्रश्न13– निम्नलिखिति पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

(क) बरन–बरन तरू फूले उपबन बन .....आवत बसंत रितुराज कहियतु हैं।

उ0– पद्यांश 1 को पढें।

(ख) सीत कौ प्रबल सेनापति कोपि चढयौ दल.....छतियाँ की छाँह राख्यौ पाउक छिपाइ कै।।

उ0– पद्यांश 4 को पढें।

Mahesh Kumar Bairwa (Lecturer)